भगत कबीर – सबद ७

जब हम एको एकु करि जानिआ ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२४

जब हम एको एकु करि जानिआ ॥
तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥१॥
हम अपतह अपुनी पति खोई ॥
हमरै खोजि परहु मति कोई ॥१॥ रहाउ ॥
हम मंदे मंदे मन माही ॥
साझ पाति काहू सिउ नाही ॥२॥
पति अपति ता की नही लाज ॥
तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥३॥
कहु कबीर पति हरि परवानु ॥
सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥४॥३॥

सार: केवल उपदेशक पर निर्भर होकर जीवन को दिशा देने से आत्मिक वृद्धि और संभावनाएं सीमित हो सकती हैं। वास्तव में उन्नति करने के लिए यह ज़रूरी है कि अपने मूल्यों, अनुभवों और विचारों को समझें क्योंकि वह ही आपके कर्मों और निर्णय के मार्गदर्शक हैं। अपने वास्तविक स्वरूप को खोजने की यात्रा आत्म-अन्वेषण से होकर गुज़रती है, जहाँ आप अपनी ताक़त, कमज़ोरियों और परिस्थितियों को स्वीकार करते हैं। यह रूहानी राह चुनने और बनाने में सहायता करते हैं।

जब हम एको एकु करि जानिआ ॥
जबसे मुझे एहसास हुआ है कि सर्वव्यापी जागरूकता केवल एक ही है।

तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥१॥

फिर लोग दुखी क्यों हैं? यह दर्शाता है कि लोग सामाजिक और व्यक्तिगत आदतों के अंतर्संबंध को समझ नहीं पाते जिससे दुख का अनुभव होता है। (१)

हम अपतह अपुनी पति खोई ॥

मैंने अपने कारण अपना सम्मान खो दिया है। यह बदलाव लाने और परंपरा और प्रगति के बीच संतुलन बनाने के संकल्प को दर्शाता है।

हमरै खोजि परहु मति कोई ॥१॥ रहाउ ॥

कोई मेरी राह पर न चले। इसका मतलब है कि हर किसी को अपनी सच्चाई और पहचान खुद तलाशनी चाहिए, न कि किसी और की राह पर चलना चाहिए। (१)(विराम)

हम मंदे मंदे मन माही ॥

मैं नीच हूँ क्योंकि मेरा मन नकारात्मक है। यह समझना ज़रूरी है कि हमारी सोच ही हमारे चरित्र को दर्शाती है।

साझ पाति काहू सिउ नाही ॥२॥

मुझे किसी से लगाव नहीं और मै किसी प्रशंसा का इच्छुक नहीं हूँ। यह उन बंधनों से मुक्ति को दर्शाता है जो हमारी पहचान से जुड़े होते हैं। (२)

पति अपति ता की नही लाज ॥

सम्मान या अपमान के विचार से मुझे कोई लाज नहीं है। यह दर्शाता है कि हम समाज की परिभाषा से ऊपर उठ सकते हैं।

तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥३॥

सच्ची समझ तभी आएगी जब हम अपने भ्रम और नकली परतों को हटाएंगे। (३)

कहु कबीर पति हरि परवानु ॥

कबीर कहते हैं कि असली सम्मान तब है जब हम सृष्टि की एकता को पहचान कर उसे अपनाते हैं।

सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥४॥३॥

सब कुछ त्याग कर उस सर्वव्यापी चेतना का स्मरण करें जो हम सबको जोड़ती है। (४)(३)

तत्त्व: भगत कबीर का मानना है कि लगाव हमारे जीवन में दृढ़ता, जुनून या अति-लगाव के रूप में प्रकट हो सकता है। छोड़ देना या जाने देना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसमें परिणामों, इच्छाओं और अपेक्षाओं के प्रति हमारे लगाव को छोड़ना या कम करना शामिल है। यह प्रक्रिया हमारे अहंकार से हटकर उस निराकार, सर्वव्यापी चेतना की ओर बढ़ने का संकेत देती है जो सभी जीवों को धारण कर उन्हें बनाए रखती है। एक आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति स्वयं को शरीर, मन या बुद्धि से नहीं जोड़ता और प्रकृति के विभिन्न रूपों और अपने बीच किसी भी प्रकार के भेद को नहीं देखता। संत इस अवस्था को एकता की चेतना या मुक्ति कहते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com